Determination of Incidence of Tax under Perfect Competition

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत क्रेता एवं विक्रेता अपनी अपनी वस्तुओं का क्रय विक्रय करते रहते है। दोनो ही वर्गों की आपस में यह चेष्टा रहती है कि एक-दूसरे पर करो का भार अधिक से अधिक मात्रा में डाला जा सके। चूंकि पूर्णप्रतियोगिता में क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार भाव का पूर्णज्ञान होता है। इसलिए कोई भी विक्रेता अपनी वस्तु को बाजार भाव से ऊँचे मुल्यों में बेचने में समर्थ नही हो पाता है। यदि वह ऐसा करता है तो क्रेता उसकी वस्तु की मांग कम कर देता है फलस्वरूप विक्रेता को भी बाजार भावों पर ही वस्तुएं बेचनी पड़ेगी। इसलिए सरकार द्वारा जो वस्तुओं पर कर लगाया जाता है वह कर भार विक्रेता अधिक से अधिक क्रेता पर डालने का और उपभोक्ता कम से कम वहन करना चाहते है। अतः कर भार किस पर पड़ेगा यह निम्न बातों पर निर्भर करता है—

(A) वस्तु की मांग की लोच

वस्तु की मांग जितनी ही अधिक बेलोचदार होगी करों का भार उपभोक्ताओं पर उतना ही अधिक पड़ेगा क्योंकि ऐसी वस्तुओं के मुल्य बढ़ने पर भी लोगो के द्वारा वस्तुओं का

उपभोग बढ़ाना ही जाता है। क्योंकि ये ऐसी वस्तुएं होती है जिसके उपभोग के बिना जीवन का चलना असंभव होता है। तब यदि बेलोच मांग वाली वस्तुओं पर सरकार कर लगाये तो उत्पादक करों का पूरा भार उपभोक्ताओं पर डाल देता है क्योंकि मूल्य के बढ़ने पर भी इन वस्तुओं की मांग घटती नहीं है।

लोचदार मांग वाली वस्तुओं का मूल्य थोड़ा भी बढ़ने पर उपभोक्ता द्वारा वस्तु की मांग घटा दी जाती है इसलिए लोचदार मांग वाली वस्तुओं के करों का आंशिक भार ही उपभोक्ताओं पर डाला जाता है और अधिकांश भाग उत्पादक तथा वस्तु के विक्रेता स्वयं वहन करते हैं। इस प्रकार लोचदार मांग वाली वस्तुओं का कर-भार उत्पादकों पर तथा बेलोचदार मांग वाली वस्तुओं का कर-भार उपभोक्ताओं पर पड़ता है। इसे निम्न चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है —

(1) <u>पूर्णतया लोचदार मांग</u> —

पूर्णतया लोचदार मांग वाली वस्तुओं पर कर लगने से वस्तुओं का मूल्य बढ़ जाता है फलस्वरूप वस्तुओं की मांग अधिक घट जाती है अतः करों का विवर्तन संभव नहीं होता है और कर का भार विक्रेता को ही वहन करना पड़ता है। इसे निम्न चित्र द्वारा

प्रस्तुत कर सकते है —

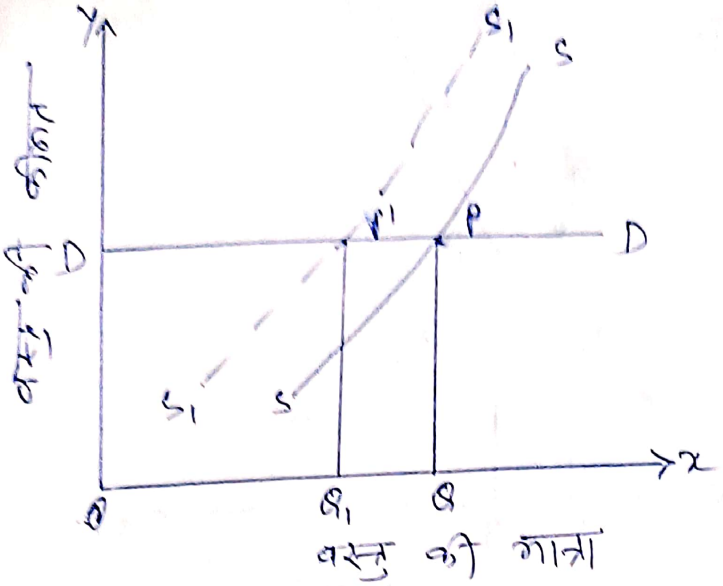

उपरोक्त चित्र में DD मांग की रेखा है। कर लगाने से पूर्व वस्तु का मूल्य OD or QP है तथा वस्तु की मांग OQ तथा वस्तु की पूर्ति रेखा SS है। अब जब सरकार कर लगाती है तो मूल्य पूर्ववत QP or Q_1P_1 रहता है लेकिन OQ से घटकर OQ_1 हो जाती है। अतः पुर्णतया लोचदार वस्तुओं के करों का निवर्तन नही हो सकता है। वैसे व्यवहार में इसप्रकार की मांग की लोच नही पायी जाती है।

(ii) लोचदार मांग

जब वस्तु की मांग की लोच इकाई से अधिक होती है तब करों का अधिकांश भार उत्पादक वहन कर लेता है और कुछ मात्रा में करों का भार वह उपभोक्ताओं की ओर हस्तान्तरित करता है। इसे हम चित्र द्वारा प्रस्तुत कर सकते है —

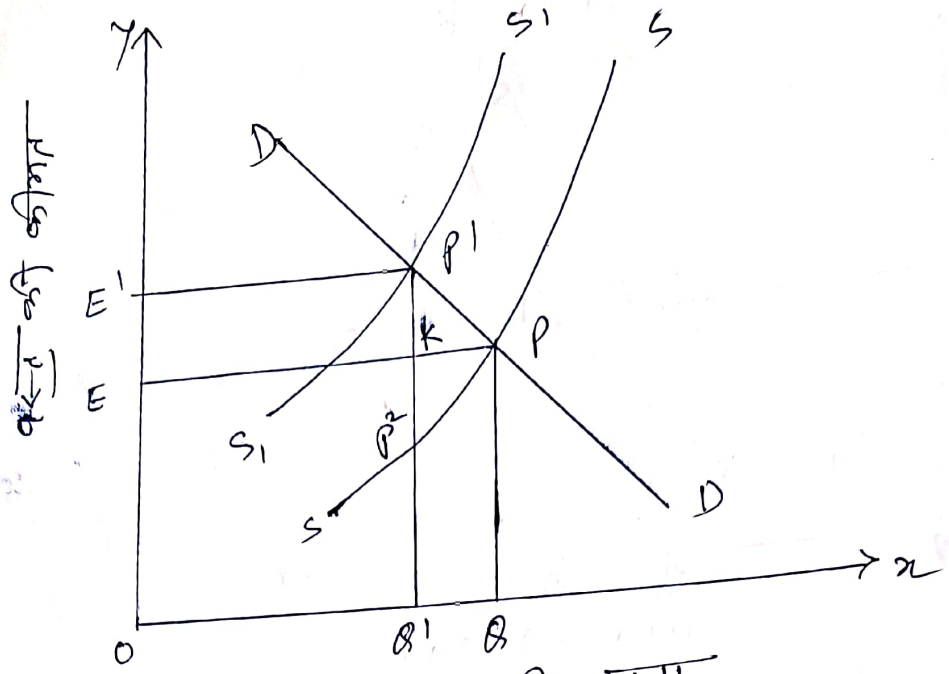

उपरोक्त चित्र में D D मांग की रेखा है। कर लगने से पूर्व वस्तु की मांग एवं पूर्ति का संतुलन P बिन्दु पर होता है ऐसी दशा में वस्तु की कीमत OE या QP के बराबर है। अब वस्तु पर P_2P' के बराबर कर लगने से वस्तु का मूल्य QP से बढ़कर Q'P' हो जाता है। मूल्य के बढ़ जाने से वस्तु की मांग OQ से घटकर OQ' ही रह जाती है। मूल्य के बढ़ने से यहाँ मांग में उतनी कमी नहीं होती जितनी की पूर्णतया लोचदार वस्तु में हुई थी। अतः P_2P' के बराबर कर लगने पर कर की राशि में से P_2K के बराबर कर को उत्पादक अपनी जेब से देता है तथा KP' कर के भाग को उपभोक्ता की ओर विवर्तित कर देता है।

(iii) बेलोचदार मांग

इसप्रकार की वस्तुओं पर यदि कर लगाया

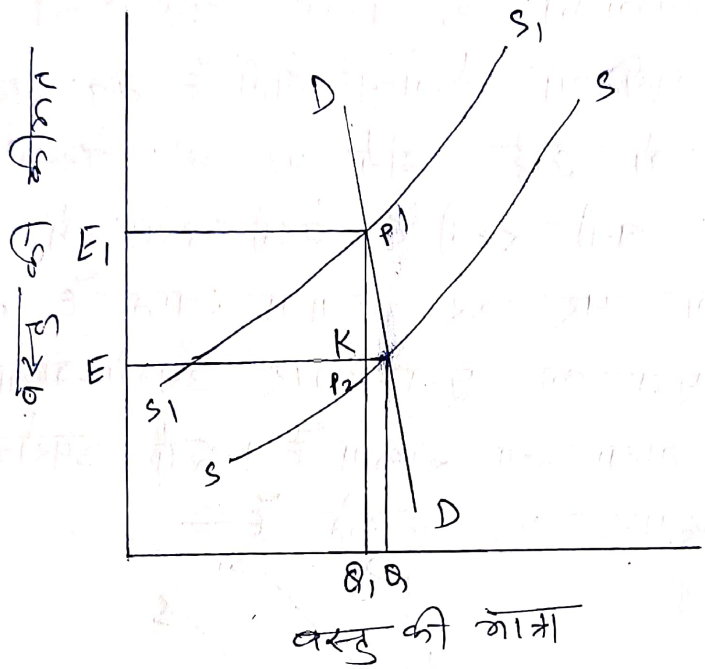

जाता है तो उत्पादक करों का अधिकांश भाग उपभोक्ताओं की ओर हस्तान्तरित कर देगा और स्वयं कम से कम भार को वहन करेगा। इसे हम निम्न चित्र से स्पष्ट कर सकते हैं —

उपरोक्त चित्र में DD बेलोचदार मांग की लोच वाली वक्र रेखा है। कर लगने से पूर्व वस्तु की मांग OQ के बराबर तथा वस्तु का मूल्य OE या QP के बराबर है। माना कि वस्तु पर P_2P^1 के बराबर कर लगाया जाता है ऐसी दशा में वस्तु का मूल्य QP से बढ़कर Q^1P^1 हो जाता है और मांग OQ से घटकर OQ_1 हो जाती है। मांग में कमी अन्य दशाओं की अपेक्षा कम होती है। चित्र के अनुसार वस्तु पर P_2P_1 के बराबर कर लगाया गया है और इस कर की राशि में से उत्पादक KP^1 राशि के बराबर करों का भार को

उपभोक्ताओं की ओर विवर्तित करेगा और P_2K के बराबर राशि का भुगतान वह स्वयं वहन करता है।

(iv) पूर्णतया बेलोच मांग

जब उपभोक्ता के लिए वस्तु की मांग की लोच पूर्णतया बेलोच होती है तब वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने पर भी वस्तु की मांग पूर्ववत बनी रहती है ऐसी दशा में यदि वस्तुओं पर कर लगाया जाता है तो करो का पूरा का पूरा भार उपभोक्ताओं की ओर डाला जा सकता है। इसे उपरोक्त चित्र से स्पष्ट कर सकते हैं—

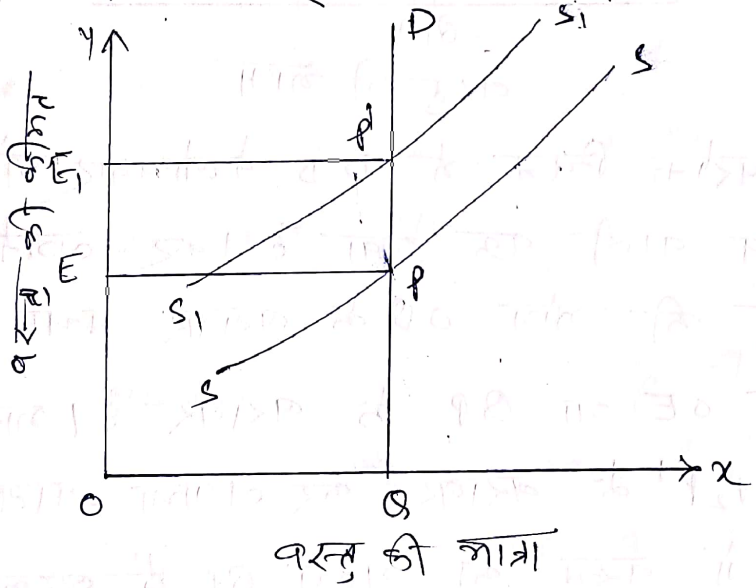

उपरोक्त चित्र में SS पूर्ति रेखा जब QD मांग की रेखा को P बिन्दु पर काटती है ऐसी दशा में वस्तु की मांग OQ के बराबर होगा। माना कि वस्तु पर PP1 के बराबर कर लगाया जाता है ऐसी दशा में वस्तु का मूल्य QP से बढ़कर QP1 हो जाता है। मूल्य